हफ़्तावार रिसाला : 384
Weekly Booklet : 384

Tafseere Noorul Irfan Se 92 Madani Phool (Hindi)

“तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान”

से 92 मदनी फूल (क़िस्त : 1)

सफ़हात 20

मदीने से गुजरात जाने का हुक्म 01
रब की सब से आ'ला ने'मत 03
अ़ज़ाब आने की वज्ह 11
नमाज़ में सुस्ती की अ़लामात 16

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दावते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "**तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान" से 92 मदनी फूल** (क़िस्त : 1)"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए WhatsApp, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

''तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान'' से 92 मदनी फूल (क़िस्त़ : 1)

दुआए अ़त्तार : **या अल्लाह** पाक ! जो कोई 19 सफ़ह़ात का रिसाला : ''**तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान से 92 मदनी फूल** (क़िस्त़ : 1)'' पढ़ या सुन ले उसे क़ुरआने करीम की बरकतों से मालामाल फ़रमा और उस की मां बाप समेत बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की गई : ''हम आप पर किस त़रह़ दुरूद भेजें ?'' इर्शाद फ़रमाया : यूं पढ़ो :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاَزْوَاجِهٖ وَ ذُرِّیَّتِهٖ كَمَا صَلَّیْتَ عَلٰی اٰلِ اِبْرَاھِیْمَ وَبَارِكْ عَلٰی مُحَمَّدٍ
وَّاَزْوَاجِهٖ وَ ذُرِّیَّتِهٖ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰی اٰلِ اِبْرَاھِیْمَ اِنَّكَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ۔ (بخاری، 2/429، حدیث:3369)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

मदीने से गुजरात जाने का हुक्म

मुफ़स्सिरे क़ुरआन ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَیْه सात मरतबा ह़रमैने शरीफ़ैन की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुए। एक मरतबा ह़ज के बा'द लम्बे अ़र्से तक मदीनए मुनव्वरह की पुरकैफ़ और नूरबार फ़ज़ाओं में अपनी ज़िन्दगी के ह़सीन अय्याम गुज़ारे, दिल में येह ख़्वाहिश मचल्ने

लगी कि काश ! कोई ऐसी सूरत निकल आए कि हमेशा के लिये इसी पाक सर ज़मीन पर रहना नसीब हो जाए। मस्जिदे नबवी शरीफ़ के क़रीब रहने वाले एक साहिब को ख़्वाब में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब हुई और येह हुक्म मिला : "अह़मद यार ख़ान से कहो कि वोह गुजरात जाएं और तफ़्सीर का काम करें।" आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तक जब येह पैग़ाम पहुंचाया गया तो आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बेहद ख़ुश हुए और फ़रमाने लगे : बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से येह हुक्म मिला है कि गुजरात जाओ ! तो अब गुजरात ही मेरे लिये मदीना है। (ह़याते सालिक, स. 127 मुलख़्ख़सन)

मदीने का कुछ काम करना है सय्यिद

मदीने से मैं इस लिये जा रहा हूं

आ़शिक़े सादिक़ मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

ह़कीमुल उम्मत, सच्चे आ़शिक़े रसूल, आ़लिमे बा अ़मल, सूफ़िये बा सफ़ा, मुफ़स्सिरे क़ुरआन ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मुबारक नाम से कौन सा आ़शिक़े रसूल मुतआ़रिफ़ नहीं ? **अल्लाह** पाक ने दुन्या भर में मुफ़्ती साहि़ब को और आप की कुतुबो तफ़ासीर को मक़्बूलिय्यत अ़ता फ़रमाई है और मक़्बूलिय्यत क्यूं न हो ! कि तफ़्सीर लिखने का हुक्म तो आप को बारगाहे रिसालत से हुवा। मुफ़्ती साहि़ब की मश्हूर दो तफ़ासीर हैं : ﴾1﴿ तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान ﴾2﴿ तफ़्सीरे नई़मी (येह मुकम्मल तफ़्सीर मुफ़्ती साहि़ब की नहीं है, 11 पारों की तफ़्सीर लिखने के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का इन्तिक़ाल हो गया।)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने वक़्त के बहुत बड़े आ़लिमे दीन और मुह़द्दिस थे। आप की तह़रीरात व तस्नीफ़ात

पढ़ें तो ऐसा लगता है गोया हर हर सत्र (या'नी लाइन) से इश्क़े रसूल के चश्मे फूट रहे हों। तफ़्सीरे क़ुरआन हो या शर्हे ह़दीस, मुफ़्ती साहिब शाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बयान करने का कोई मौक़अ़ जाने नहीं देते। अ़क़्ली दलाइल से मुतअस्सिर होने वालों को अ़क़्ली और आ़म मुसल्मानों को नक़्ली (या'नी क़ुरआनो ह़दीस से) मिसाल देते हैं कि अगर तन्क़ीद की ऐनक न हो तो बन्दा अश अश कर उठे। येह रिसाला आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की मश्हूर तफ़्सीर “नूरुल इरफ़ान” के ह़सीन निकात पर मुश्तमिल है। **अल्लाह** पाक मुफ़्ती साहिब के मज़ार पर रह़मतो अन्वार की बरसात फ़रमाए और हमें इन के फ़ैज़ान से मालामाल फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

“सूरतुल फ़ातिह़ा” से ह़ासिल होने वाली 4 ख़ूब सूरत बातें

﴾1﴿ ह़ज़रते सुलैमान (عَلَيْهِ السَّلَام) ने (मलिकए) बिल्क़ीस को ख़त़ लिखा तो अव्वल “**बिस्मिल्लाह**” लिखी, इस की बरकत से उन्हें मलिकए यमन और मुल्के यमन अ़त़ा हुए। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 2)

﴾2﴿ ज़ब्ह़ पर सिर्फ़ “بِسْمِ اللّٰهِ، اَللّٰهُ اَكْبَر” कहे क्यूं कि क़ह्र के काम पर रब की रह़मत का ज़िक्र न करे, इसी लिये ह़ुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का नाम ज़ब्ह़ पर नहीं लिया जाता। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 2)

﴾3﴿ रब की तमाम ने'मतों से आ'ला ने'मत “सीधे रास्ते की हिदायत” है कि हर रक्अ़त में इस की दुआ़ कराई गई। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 2)

﴾4﴿ सीधे रास्ते की पहचान येह है कि उस पर औलियाउल्लाह (رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم) और सालिह़ीन (या'नी नेक बन्दे) हों क्यूं कि वोही रब के इन्आ़म वाले बन्दे हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 2)

“सूरतुल बक़रह” से ह़ासिल होने वाली 41 ख़ूब सूरत बातें

﴾1﴿ कुरआन के बा'द न कोई नबी है, न कोई आस्मानी किताब, क्यूं कि येह (या'नी कुरआने करीम) सिर्फ़ तस्दीक़ फ़रमाने वाला है किसी की बिशारत (या'नी खु़श ख़बरी) नहीं देता। तस्दीक़ गुज़श्ता (या'नी पिछली किताब या बात) की होती है और बिशारत आइन्दा की। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 9)

﴾2﴿ बेहतरीन वाइज़ (या'नी मुबल्लिग़) वोह है जिस का अ़मल क़ौल से ज़ियादा वा'ज़ो तब्लीग़ करे। उसे देख कर लोग मुत्तक़ी बन जाएं।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 9)

﴾3﴿ बनी इसराईल पर सारी तौरैत एक दम आ गई, तमाम अह़काम की पाबन्दी उन पर अचानक पड़ गई और उन्हें उस के क़बूल करने से इन्कार हुवा तो उन पर तूर (पहाड़) खड़ा कर दिया कि क़बूल करो वरना गिरता है। कुरआन का आहिस्ता आहिस्ता आना रब की रह़मत है कि आसानी से अह़काम पर अ़मल हो गया। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 12)

हु़ज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) जानते हैं

﴾4﴿ मा'रिफ़ते इलाही और ख़ौफ़े खु़दा पथ्थरों को भी है और हु़ज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की मा'रिफ़तो मह़ब्बत लकड़ियों, पथ्थरों को है। हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : उहुद पहाड़ हम से मह़ब्बत करता है हम इस से मह़ब्बत करते हैं। (بخاری، 3/150، حدیث:4422) इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि हु़ज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पथ्थरों के दिल की बात भी जानते हैं तो उन्हें इन्सानों के दिलों की बातें क्यूं न मा'लूम होंगी और जिस दिल में हु़ज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की मह़ब्बत न हो वोह पथ्थर से बदतर है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 14)

﴾5﴿ हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सिफ़त बयान करने में बुख़्ल से काम लेना या लोगों को इस से रोकना यहूद का त़रीक़ा है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 14)

﴾6﴿ क़ियामत में मदद किसी के लिये न होना कुफ़्फ़ार के लिये है, **अल्लाह** पाक मोमिनों के लिये बहुत से मददगार मुक़र्रर फ़रमा देगा। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 16)

﴾7﴿ मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द चार हज़ार पैग़म्बर तशरीफ़ लाए, जो शरीअ़ते मूसवी के मुह़ाफ़िज़ (या'नी ह़िफ़ाज़त करने वाले) और तौरैत के अह़काम को जारी करते थे चूंकि हमारे हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के बा'द कोई नबी नहीं, इस लिये ह़िफ़ाज़त का येह काम उ़लमाए इस्लाम के सिपुर्द हुवा और اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! कि उ़लमा ने कामिल त़ौर पर येह फ़रीज़ा अदा किया, इसी लिये हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के उ़लमा बनी इसराईल के नबियों की त़रह़ हैं। (كشف الخفاء،2/60،حديث:1742) (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 16)

﴾8﴿ हर शख़्स ताजिर है, ज़िन्दगी उस की दुकान, ज़िन्दगी में साअ़तें (या'नी अवक़ात) उस के सौदे हैं जो हर वक़्त घट रहे हैं, येह साअ़तें ख़र्च कर के आ'माल के सौदे ख़रीद रहा है जो हर वक़्त बढ़ रहे हैं। जो नेक आ'माल कमाए वोह नफ़्अ़ वाला ब्योपारी (Merchant) है, जो कुफ़्र व गुनाह कमाए वोह ख़सारे में जा रहा है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 17)

﴾9﴿ क़ुरआन शरीफ़ की त़रफ़ पीठ नहीं करनी चाहिये कि येह बेरुख़ी और बे तवज्जोही की अ़लामत है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 19)

﴾10﴿ कोई काफ़िर मुश्रिक कभी मुसल्मानों का ख़ैर ख़्वाह नहीं हो सकता, जो इन्हें ख़ैर ख़्वाह समझेगा वोह धोका खाएगा। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 20)

﴾11﴿ ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ बहुत सी दुआएं मांगीं जो रब्बे पाक ने लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ (या'नी बिल्कुल उसी

त़रह़) क़बूल फ़रमाई। (जैसा कि) हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मोमिन जमाअ़त में पैदा हों। हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में ही पैदा हों। हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم साहि़बे किताब रसूल मुरसल हों। हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को किताब के इ़लावा हि़क्मत भी अ़त़ा हो। हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम जहान के मुअ़ल्लिम (या'नी सिखाने वाले) हों कि सब उन से सीखें, वोह बजुज़ परवर्दगार (या'नी **अल्लाह** पाक के इ़लावा) किसी से न सीखें। हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास बैठने वाले सब पाक मोमिन हों, कोई फ़ासिक़ो फ़ाजिर न हो। इस से मा'लूम हुवा कि जो शख़्स सह़ाबा को फ़ासिक़ो फ़ाजिर कहे वोह इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की इस दुआ़ की क़बूलिय्यत का मुन्किर (या'नी इन्कार करने वाला) है। जिस ख़ुश नसीब जमाअ़त को हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जैसा मुज़क्की (सुथरा करने वाला) और पाको साफ़ फ़रमाने वाला मुअ़ल्लिम मिले वोह जमाअ़त कैसी पाक होगी! येह भी मा'लूम हुवा कि ख़ानए का'बा क़बूलिय्यते दुआ़ की जगह है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 24)

(सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم सब जन्नती हैं, क़ुरआने करीम में इन सब से भलाई का वा'दा किया गया है, इन के बारे में किसी तारीख़ी किताब पर ए'तिमाद करते हुए बुरी बात ज़ेह्न में लाना ईमान के लिये बहुत ख़त़रनाक है। **अल्लाह** पाक हमें सह़ाबए किराम और अहले बैते इ़ज़ाम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم का हमेशा बा अदब व बा वफ़ा रखे। सह़ाबा व अहले बैत के फ़ज़ाइल पढ़ने के लिये अमीरे अहले सुन्नत के दो रसाइल : "हर सह़ाबिये नबी जन्नती जन्नती" और "फ़ैज़ाने अहले बैत" पढ़िये।)

﴾12﴿ मुसल्मान होना कमाल नहीं बल्कि मुसल्मान मरना कमाल है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 25)

﴾13﴿ दीन पर अ़मल करने में किसी के ता'नो तश्नीअ़ (या'नी बुरा भला कहने) का ख़याल न करना चाहिये। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 28)

﴾14﴿ जो शख़्स छूटी हुई सुन्नत जारी करे, सो शहीदों का सवाब पाएगा क्यूं कि शहीद एक मरतबा ज़ख़्म खा कर फ़ौत हो जाता है मगर येह शख़्स हमेशा ज़बानों के ज़ख़्म खाता रहता है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 28)

﴾15﴿ इबादत की त़रह़ ब वक़्ते ज़रूरत खाना पीना भी अहम फ़र्ज़ है क्यूं कि इस पर तमाम फ़राइज़ की अदाएगी मौक़ूफ़ है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 32)

﴾16﴿ हमेशा पाक और ह़लाल चीज़ें खाना चाहिये, तक़्वा (या'नी परहेज़ गारी) के येह मा'ना नहीं कि अच्छे खाने छोड़े बल्कि तक़्वा येह है कि ह़राम चीज़ें छोड़ दे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 32)

﴾17﴿ प्यारा माल राहे ख़ुदा में दे और ज़िन्दगी व तन्दुरुस्ती में दे जब ख़ुद उसे भी माल की ज़रूरत हो। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 33)

﴾18﴿ क़ुरआन शरीफ़ के 23 नाम हैं, जिन में से एक नाम क़ुरआन (या'नी जम्अ़ करने वाली किताब) है। जिस ने सारे इन्सानों को एक दीने इस्लाम पर जम्अ़ कर दिया। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 34)

﴾19﴿ सूफ़ियाए किराम (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم) फ़रमाते हैं कि अगर तुम चाहते हो कि रब तुम्हारी माने तो तुम रब की मानो, उस की न मान कर अपनी बात मनवाना ख़ाम ख़याल (बेकार) है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 35)

﴾20﴿ सिर्फ़ दुन्या त़लब करना बुरी चीज़ है, हर इबादत में, हर दुआ़ में **अल्लाह** की रिज़ा तलाश करनी चाहिये। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 38, मफ़्हूमन)

﴾21﴿ दूसरे सख़ी तो मांगने पर नाराज़ होते हैं, रब ऐसा करीम है कि न मांगने या कम मांगने पर नाराज़ होता है लिहाज़ा ख़ूब मांगो और हर वक़्त मांगो। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 38)

﴾22﴿ इन्सान को मुआ़मलात से आज़्माओ न कि ज़बान से। हर चमक्ने वाला सोना नहीं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 39)

﴾23﴿ दाढ़ी मुंडवाना, मुश्रिकों का सा लिबास पहनना ईमानी कमज़ोरी की अ़लामत है, जब मुसल्मान हो गए तो सीरतो सूरत में हर त़रह़ मुसल्मान हो (जाओ)। गन्दे गिलास में अच्छा शरबत नहीं पिया जाता। अपने ज़ाहिरो बात़िन दोनों को संभालो। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 39 मुल्तक़त़न)

दुन्यवी ज़िन्दगी और दीनी ज़िन्दगी में फ़र्क़

﴾24﴿ दुन्या की ज़िन्दगी वोह है जो नफ़्स की ख़्वाहिशात में सर्फ़ हो (या'नी गुज़रे) और जो तोशए आख़िरत (या'नी मरने के बा'द वाली ज़िन्दगी के लिये नेक काम) जम्अ़ करने में ख़र्च हो वोह بِفَضْلِهٖ تَعَالٰی दीनी ज़िन्दगी है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 40)

﴾25﴿ मोमिन कभी अपने आ'माल पर भरोसा नहीं करता बल्कि उम्मीद रखता है जिस में ख़ौफ़ होता है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 42)

﴾26﴿ अस्ली बख़्शिश सिर्फ़ रह़मते इलाही से होगी न कि नेक आ'माल से। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 42)

﴾27﴿ सच्ची उम्मीद वोह है जो आ'माल करने के बा'द हो, आ'माल छोड़ना फिर उम्मीद करना मज़ाक़ है, उम्मीद नहीं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 42)

﴾28﴿ जो येह ख़याल रखे कि मेरे हर काम रब जानता है वोह اِنْ شَآءَ اللّٰه कभी गुनाह की जुरअत न करेगा। येह ध्यान तक़्वा की अस्ल (Base या'नी बुन्याद) है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 45)

﴾29﴿ मौत का डर अच्छा भी है और बुरा भी, अगर इस डर से इन्सान गुनाहों से तौबा करे तो अच्छा है और अगर इस की वज्ह से इन्सान नेक

आ'माल छोड़ दे या गुनाह पर राग़िब हो जाए तो बुरा है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 48)

30 क़र्ज़े ह़सन वोह कहलाता है जिस का मक़रूज़ (या'नी क़र्ज़दार) पर तक़ाज़ा न हो। दे दे बेहतर वरना मुआफ़। इस में चन्द शर्तें हैं : देने वाले में इख़्लास हो, खुशदिली से दिया जाए, माले ह़लाल ख़र्च करे, इस के बदले में जल्दी न करे। कभी हर सदक़े को क़र्ज़े ह़सन कह देते हैं।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 48)

31 हमेशा मुख़्लिस बन्दे थोड़े होते हैं कि (जंगे बद्र में) हज़ारों में से सिर्फ़ 313 मुख़्लिस निकले। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 50)

32 फ़ज़ाइल में अम्बिया के दरजे मुख़्तलिफ़ हैं, बा'ज़ बा'ज़ से आ'ला और हमारे हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सब से आ'ला हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 51)

33 येह तो कह सकते हैं कि बा'ज़ रसूल बा'ज़ से आ'ला हैं, येह नहीं कह सकते कि बा'ज़ बा'ज़ से अदना हैं, इस में उन की तौहीन है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 51)

34 ह़ज़रते जिब्रील (عَلَیْہِ السَّلَام) हर वक़्त ईसा عَلَیْہِ السَّلَام के साथ रहते थे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 51)

35 रब की हर ने'मत में से ख़ैरात करनी चाहिये, इल्म, माल, तन्दुरुस्ती, औलाद, वक़्त सब में से **अल्लाह** की राह में ख़र्च करे।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 51)

36 रब तआ़ला ग़नी हो कर भी ह़लीम है कि बन्दों के गुनाहों से दर गुज़र फ़रमाता है तो तुम भी फ़ुक़रा और अपने मा तह़तों की ख़त़ाओं से दर गुज़र किया करो। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 54)

﴾37﴿ जैसे बा'ज़ नेकियों से गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं, ऐसे ही बा'ज़ गुनाहों से नेकियां बरबाद हो जाती हैं। (मसलन नमाज़, रोज़े से गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं जब कि ग़ीबत, चुग़ली और ह़सद वग़ैरा से नेकियां बरबाद हो जाती हैं।)

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 55)

﴾38﴿ सदक़ा छुपा कर भी करे और अ़लानिया भी बल्कि सदक़ए फ़र्ज़ (मसलन ज़कात, उ़श्र वग़ैरा) अ़लानिया करे और सदक़ए नफ़्ल छुपा कर जैसे पन्जगाना और जुमुआ़, ईदैन की नमाज़ अ़लानिया पढ़े। तहज्जुद ख़ुफ़्या (या'नी छुप कर) अदा करे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 56)

﴾39﴿ सूदख़ोर ज़ाहिर में इन्सान, ह़क़ीक़त में शैत़ान है कि उसे ग़रीब पर रह़्म नहीं आता, उसे बरबाद कर के अपने (आप) को बनाता है, लिहाज़ा इसी शक्ल में क़ियामत में होगा। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 56)

﴾40﴿ मोमिन के लिये सूद में बरकत नहीं, येह काफ़िर की ग़िज़ा हो सकती है मोमिन की नहीं, गन्दगी का कीड़ा गन्दगी खा कर जीता है, बुलबुल फूल को। लिहाज़ा अपने आप को कुफ़्फ़ार पर क़ियास न करो, काफ़िर सूद ले कर तरक़्क़ी करेगा, मोमिन ज़कात दे कर। मज़ीद येह कि सूद के पैसे से ज़कात, ख़ैरात क़बूल नहीं होते। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 57)

﴾41﴿ दुआ़ के वक़्त **अल्लाह** को पुकारना और रब या उस नाम से पुकारना जो अपने मक़्सद के मुवाफ़िक़ हो बेहतर है। बीमार कहे : ''يَاشَافِيَ الْاَمْرَاض'', मोह़्ताज पुकारे : ''يَاقَاضِيَ الْحَاجَات'', गुनहगार पुकारे : ''يَاغَفَّارَالذُّنُوْب'', इसी लिये रब के नाम बहुत हैं क्यूं कि बन्दों की ह़ाजात (या'नी ज़रूरिय्यात) बहुत हैं। رَبَّنَا या اَللّٰهُمَّ ज़ियादा मह़्बूब (या'नी ''ऐ हमारे रब या ऐ मेरे **अल्लाह** पाक'' कहना ज़ियादा पसन्दीदा) है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 59)

''सूरए आले इमरान'' से ह़ासिल होने वाली 22 अहम बातें

﴾1﴿ हमेशा नबी के झुटलाने पर ही अज़ाब आता है। फ़िरऔन ने चार सो बरस ख़ुदाई का दा'वा किया और बे गुनाह बच्चे ज़ब्ह़ कराए हलाक न हुवा। जब मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को झुटलाया मारा गया। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 61)

﴾2﴿ सुब्ह़ के वक़्त दुआ़ और इस्तिग़्फ़ार ज़ियादा अच्छे हैं क्यूं कि इस वक़्त सारी मख़्लूक़ ज़िक्रे इलाही करती है, सिवा कुत्ते के। अगर एक का भी ज़िक्र क़बूल हुवा तो اِنْ شَآءَ الله सब का क़बूल होगा। आख़िरी निस्फ़ शब से आफ़्ताब निकलने तक को सह़र कहते हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 62)

﴾3﴿ ह़सद बुरी बला है, सब को शैत़ान ने गुमराह किया और शैत़ान को ह़सद ने। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 63)

﴾4﴿ जैसे रब अपनी रबूबिय्यत में बन्दों के मानने से बे नियाज़ है, ऐसे ही नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी नुबुव्वत में दुन्या वालों से ग़नी हैं, किसी के इन्कार से सूरज का नूर घट नहीं जाता, अगर तमाम आ़लम हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का इन्कारी हो जाए तो उन के मर्तबे में कमी नहीं आती। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 63)

﴾5﴿ ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को कलिमतुल्लाह इस लिये कहा जाता है कि आप के जिस्म शरीफ़ की पैदाइश कलिमए कुन से हुई, बाप या मां के नुत़्फ़े से न हुई। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 67)

﴾6﴿ ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने में इल्मे त़िब का बहुत ज़ोर था। जालीनूस ह़कीम आप ही के ज़माने में था और अत़िब्बा के नज़्दीक तीन चीज़ें ना मुम्किन हैं : ﴾1﴿ मुर्दा ज़िन्दा करना, ﴾2﴿ मादर ज़ाद अन्धे अच्छे करना (या'नी पैदाइशी नाबीना की आंखें रोशन करना), ﴾3﴿ तमाम बदन के कोढ़ी

को तन्दुरुस्त करना। आप ने येह तीन काम कर के दिखा दिये। मा'लूम हुवा कि नबी को वोह मो'जिज़े दिये जाते हैं जिन का उस ज़माने में चरचा हो। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 68)

﴾7﴿ ग़ैरे कुरआन को तज्वीदे कुरआनी और कुरआनी लहजे में न पढ़ा जाए। इस पर आयात व रुकूअ़ वग़ैरा न लगाए। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 72)

﴾8﴿ ग़ैरे कुरआन को इस त़रह़ पढ़ना या लिखना जिस से उस का कुरआन होने का शुबा हो, मन्अ़ है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 72)

﴾9﴿ लड़ते हुओं को मिला देना सुन्नते रसूल है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 76)

﴾10﴿ मुसल्मानों को आपस में लड़ाना यहूद का काम है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 76)

﴾11﴿ हर मुसल्मान मुबल्लिग़ होना चाहिये, जो मस्अला मा'लूम हो दूसरे को बताए और ख़ुद उस की अपने अ़मल से तब्लीग़ करे।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 77)

﴾12﴿ मुसल्मानों की तक्लीफ़ पर ख़ुश होना कुफ़्फ़ार का त़रीक़ा है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 79)

﴾13﴿ बद्र में शिर्कत करने वाले फ़रिश्ते दूसरे फ़रिश्तों से अफ़्ज़ल हैं कि रब ने उन पर ख़ास निशान लगा दिये हैं जिन से वोह दूसरों पर मुमताज़ होते हैं। येह भी मा'लूम हुवा कि हुज़ूर (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) और ग़ाज़ियाने इस्लाम की ख़िदमत आ'ला इबादत है कि येह ख़ुद्दाम फ़रिश्ते दूसरे फ़रिश्तों से अफ़्ज़ल हैं। लिहाज़ा हुज़ूर (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के सह़ाबा तमाम मुसल्मानों से अफ़्ज़ल हैं कि वोह ह़ज़रात वोह ख़ुश नसीब हैं जिन्हें हुज़ूर (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की ख़िदमत नसीब हुई। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 80)

﴾14﴿ अपने नेक आ'माल पर नाज़ां (या'नी ख़ुश) न हो बल्कि क़बूलिय्यत की उम्मीद रखे और रद होने से डरता रहे कि इस दरिया में बहुत जहाज़ डूब चुके हैं। शैतान के वाक़िए से इब्रत पकड़े। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 81)

﴾15﴿ **अल्लाह** का अ़ज़ाब देखना हो तो अ़ज़ाब वाली बस्तियों को देखो और अगर **अल्लाह** की रह़मत का पता लगाना हो तो रह़मत वाली बस्तियों को देखो। जहां **अल्लाह** के प्यारे सो रहे हैं और उन के दम क़दम से रौनक़ें लगी हुई हैं। येह भी मा'लूम हुवा कि इस मक़्सद के लिये सफ़र करना जाइज़ है, लिहाज़ा उ़र्स वग़ैरा में सफ़र करना दुरुस्त है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 81)

﴾16﴿ अफ़्ज़ल को अफ़्ज़ल नेकियां करनी चाहिएं। वोह तमाम मा तह़्तों से अ़मल में बढ़ कर हो। सय्यिदों, आ़लिमों, मशाइख़ को दूसरों से ज़ियादा नेक होना चाहिये। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 83)

﴾17﴿ मुसल्मान सच्चे रहें तो क़ियामत तक उन का रो'ब दुश्मन के दिल में रहेगा। हमारे बुरे करतूत से हमारी हवाख़ेज़ी (बदनामी) होती है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 84)

﴾18﴿ दुन्या में ज़ियादा मश्ग़ूलिय्यत भी मौत को सख़्त बना देती है और आख़िरत से तअ़ल्लुक़ मौत को आसान कर देता है इसी लिये बुज़ुर्गों की मौत को विसाल या उ़र्स कहते हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 85)

﴾19﴿ हु़ज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के इ़ल्म पर ए'तिराज़ करना मुनाफ़िक़ों का काम है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 89)

﴾20﴿ गुनाह के बा वुजूद रब की ने'मतें मिलना रब का अ़ज़ाब है कि येह शहद में ज़ह्‌र है और गुनाह या ख़ता पर फ़ौरन इ़ताब या पकड़ हो जाना रब की रह़मत है कि इन्सान जल्द तौबा कर लेता है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 89)

﴾21﴿ बुज़दिलों को "ख़ान बहादुर" का और जाहिलों को "शम्सुल उ़लमा" का ख़िताब देना और इन ख़िताब याफ़्ता लोगों का इस पर ख़ुश होना त़रीक़ए शैत़ान है। इसी त़रह़ बे इ़ल्म लोगों का आ़लिम फ़ाज़िल बन जाना और इस की डिग्री (या'नी सनद) पर ख़ुश होना त़रीक़ए जुह्हाल है, क्यूं कि आज कल बा'ज़ जाहिल तदबीर (कोशिश) कर के मौलवी फ़ाज़िल वग़ैरा की डिग्रियां ह़ासिल कर लेते हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 91 मुलख़्ख़सन)

﴾22﴿ दुआ़ से पहले रब की ह़म्द करना और **अल्लाह** को रब्बना कह कर पुकारना और बार बार رَبَّنَا या سُبْحٰنَكَ अ़र्ज़ करना بِفَضْلِهٖ تَعَالٰی दुआ़ की क़बूलिय्यत का ज़रीआ़ है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 91)

"सूरतुन्निसाअ" से ह़ासिल होने वाले 10 अहम मदनी फूल

﴾1﴿ इन्सान का वोह (ना बालिग़) बच्चा यतीम है जिस का बाप फ़ौत हो गया हो। जानवर का वोह बच्चा यतीम है जिस की मां मर जाए। मोती वोह यतीम है जो सीप में अकेला हो, उसे "दुर्रे यतीम" कहते हैं। बड़ा क़ीमती होता है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 93)

﴾2﴿ माल कमाना कमाल नहीं, माल ख़र्च करना कमाल है। कमाना सब जानते हैं, ख़र्च करना कोई कोई जानता है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 94)

अपने मुंह मियां मिठ्ठू

﴾3﴿ अपने नाम के साथ साहिब या अल्क़ाब ख़ुद लिखना मन्अ़ है कि येह अपनी सुथराई बयान करने में दाख़िल है। ऐसे ही अपनी ता'रीफ़ अपने मुंह से बयान करना दुरुस्त नहीं। हां ! रब की ने'मत के इज़्हार के लिये जाइज़ है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 104)

﴾4﴿ ह़ुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बारगाह वोह शिफ़ाख़ाना है जिस में हर

बीमारी की दवा है। किसी को महरूम वापस नहीं किया जाता, कोई आने वाला हो। ख़याल रहे कि हमारे पास हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का आना और है और हमारा हुज़ूर (صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की बारगाह में हाज़िर होना कुछ और। सूरज का हमारे पास आना येह है कि वोह हम पर चमक जाए, हमारा सूरज के पास आना येह है कि हम आड़ हटा कर उस की धूप में आ जाएं।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 107)

﴾5﴿ सूफ़ियाए किराम (رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیۡہِم) फ़रमाते हैं कि जो आप (صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के दरवाज़े पर आ जाए वोह रब को पा लेगा मगर सिफ़ते रह़मत में। गोया हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रब का पता (Adress) हैं, इसी पते पर **अल्लाह** मिलता है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 107)

तदब्बुरे क़ुरआन या'नी क़ुरआने करीम में ग़ौरो फ़िक्र करना

﴾6﴿ क़ुरआन में ग़ौरो फ़िक्र करना भी इबादत है। उ़लमा फ़रमाते हैं कि एक आयत समझ कर पढ़ना बिग़ैर समझे हज़ार आयात पढ़ने से अफ़्ज़ल है। ज़िक्रे क़ुरआन, नज़रे क़ुरआन, फ़िक्रे क़ुरआन सब इबादत है मगर ख़याल रहे कि हर शख़्स को क़ुरआन के मसाइल पर ग़ौर करने की इजाज़त नहीं वरना दीन बरबाद हो जाएगा। अगर जाहिल, इ़ल्मे तिब में ख़ुद ग़ौर कर के इलाज करे तो जान लेगा और अगर क़ुरआन में ग़ौर कर के मसाइल निकाले तो ईमान लेगा मगर ख़याल रहे कि हर शख़्स का ग़ौर अ़लाह़दा है। मुज्तहिदीन क़ुरआन में ग़ौर कर के शरई मसाइल निकालें। सूफ़िया (رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیۡہِم) इस में ग़ौर कर के असरार (या'नी राज़) मा'लूम करें। उ़लमा इस में ग़ौर कर के अह़काम की ह़िक्मतें मा'लूम करें। अ़वाम इस में ग़ौर कर के ईमान ताज़ा करें। हर शख़्स समुन्दर में न कूदे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 110)

नमाज़ में सुस्ती की अ़लामात

﴾7﴿ नमाज़ में सुस्ती करना मुनाफ़िक़ों की अ़लामत है। इस सुस्ती की कई सूरतें हैं : बिला वज्ह मस्जिद में ह़ाज़िर न होना, जमाअ़त से बिला वज्ह नमाज़ न पढ़ना, पीछे मस्जिद में पहुंचना (या'नी मस्जिद में जमाअ़त के लिये देर से आना), बिग़ैर कुरते या बिग़ैर टोपी के सुस्ती के तौ़र पर नमाज़ पढ़ना। अरकाने नमाज़ दुरुस्त न करना। इन सब से बचना चाहिये।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 122)

﴾8﴿ दुन्या के बादशाह तीन वज्ह से सज़ा देते हैं : ﴾1﴿ अपने नुक़्सान के अन्देशे से। ﴾2﴿ नफ़्सानी ग़ुस्से की आग बुझाने के लिये। ﴾3﴿ मुजरिम के जुर्म की वज्ह से। तीसरी वज्ह की मुआ़फ़ी हो जाती है मगर पहली दो सूरतों में मुआ़फ़ नहीं करते। **अल्लाह** पाक मुजरिमों को सिर्फ़ तीसरी वज्ह से सज़ा देगा, वोह पहली दो वज्हों से पाक है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 122)

﴾9﴿ अगर्चे बा'ज़ मोमिन गुनहगारों को अ़ज़ाब होगा लेकिन उन्हें मह़शर में ज़लील न किया जाएगा क्यूं कि ज़िल्लत वहां काफ़िरों के लिये ख़ास होगी। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 123)

﴾10﴿ आ़लिमे बा अ़मल का सवाब दूसरों से ज़ियादा है क्यूं कि बा अ़मल आ़लिम दूसरों को भी नेक बना देता है। चाहिये कि आ़लिम का अ़मल सुन्नते नबवी का नमूना हो और उस की हर अदा तब्लीग़ करे।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 125)

''सूरतुल माइदह'' से ह़ासिल होने वाले 15 मदनी फूल

﴾1﴿ क़ुरबानी बड़ी पुरानी इ़बादत है कि आदम عَلَيْهِ السَّلَام के बेटों ने दी।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 135)

﴾2﴿ पिछली उम्मतों में क़ुरबानी का गोश्त खाना जाइज़ न था, उन की मक़्बूल क़ुरबानी को क़ुदरती आग जला जाती थी और मरदूद (या'नी ना मक़्बूल) क़ुरबानी वैसे ही पड़ी रहती थी। क़ुरबानी का गोश्त खाना हमारी उम्मत की ख़ुसूसिय्यत है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 135)

﴾3﴿ इन्सान ने सब से पहला जुर्म क़त्ल का किया। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 135)

﴾4﴿ ह़सद बड़ी बुरी चीज़ है, ह़सद ही ने शैत़ान को बरबाद किया।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 135)

﴾5﴿ दुन्या में सब से पहला फ़साद औ़रत की वज्ह से हुवा। शे'र :

झगड़े की बुन्यादें तीन ! ज़न है ज़र है और ज़मीन

(या'नी दुन्या में अक्सर झगड़े औ़रत, ज़मीन या मालो दौलत की वज्ह से होते हैं)

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 135 माख़ूज़न)

काफ़िर और मोमिन के अ़ज़ाब में फ़र्क़

﴾6﴿ दोज़ख़ में हमेशगी और अ़ज़ाब का हलका न होना, यक्सां रहना कुफ़्फ़ार के लिये ख़ास है। मोमिन के लिये दोज़ख़ में हमेशगी नहीं, नीज़ इस का अ़ज़ाब हलका भी किया जाएगा बल्कि बा'ज़ की जान निकाल ली जाएगी फिर दोज़ख़ से निकलने पर डाल दी जाएगी। हां ! बा'ज़ कुफ़्फ़ार को अव्वल (शुरूअ़) ही से अ़ज़ाब हलका होगा और बा'ज़ को सख़्त और बा'ज़ के लिये शुरूअ़ से ही कुछ दिनों में हलका अ़ज़ाब हुवा करेगा।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 137)

﴾7﴿ हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को नाम ले कर या मा'मूली अल्फ़ाज़ से पुकारना न चाहिये, **अल्लाह** पाक ने सारे पैग़म्बरों को नाम ले कर पुकारा मगर हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अच्छे अल्क़ाब से ही पुकारा।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 137)

बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ से फ़ैज़ान लेने का त़रीक़ा

﴾8﴿ बुज़ुर्गों की सोह़बत से वोही फ़ैज़याब होते हैं जो उन के पास अपने को ख़ाली समझ कर उन से कुछ ह़ासिल करने के लिये जाएं, जो पहले से ही कोई ख़ास राय ले कर ह़ाज़िर हों वोह कैसे फ़ैज़ लें ? ख़ाली डोल कूंएं से पानी लाता है, सफ़ेद कपड़े का रंगना आसान है, जो पहले ही से पुख़्ता सियाह हो उस पर और रंग कैसे चढ़े ! (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 138)

﴾9﴿ बुराई से रोकना अच्छाई का हुक्म करना वाजिब है, तब्लीग़ बन्द होने पर अ़ज़ाबे इलाही आने का अन्देशा है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 146)

﴾10﴿ दुश्मने ख़ुदा से दोस्ती उन की सी शक्लो सूरत बनाना, उन के तौ़र त़रीक़े इख़्तियार करना मुनाफ़िक़ों की अ़लामत है। **अल्लाह**, रसूल की मह़ब्बत और इन के दुश्मनों की मह़ब्बत एक दिल में जम्अ़ नहीं हो सकतीं, रोशनी और तारीकी का इज्तिमाअ़ (या'नी एक जगह जम्अ़ होना) ना मुम्किन है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 146)

﴾11﴿ क़ौम में उ़लमा और दरवेशों का रहना ख़ुदा की रह़मत है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 146)

ज़ौक़ अफ़्ज़ा कैफ़िय्यत

﴾12﴿ ज़िक्रे इलाही के वक़्त इश्क़ो मह़ब्बत में रोना आ'ला इ़बादत है। इसी त़रह़ अ़ज़ाबे इलाही के ख़ौफ़ व रह़मते इलाही की उम्मीद में रोना इ़बादत है नीज़ हिल हिल कर जुम्बिश के साथ क़ुरआन की तिलावत करना सुन्नत है क्यूं कि येह जुम्बिश आ़शिक़ों की विज्दानी ह़ालत है जैसे बादे नसीम से नर्म शाख़ें ह़रकत करती हैं। तिलावत करने वाला नसीमे रह़मते इलाही से हिलता है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 147)

﴾13﴿ हमारे हुज़ूरे पुरनूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने क़ब्र के इम्तिहान के सारे परचे और उन के जवाबात अपनी उम्मत को बता दिये हालां कि इम्तिहान के सुवालात छुपाए जाते हैं। येह इस उम्मत पर रब का एह़सान है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 149)

﴾14﴿ दूसरों की फ़िक्र में अपने से ग़ाफ़िल न हो जाओ बल्कि पहले ख़ुद दुरुस्त हो फिर बा'द में दूसरों को दुरुस्त करने की कोशिश करो।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 151)

﴾15﴿ अपनी ह़ाजत बरआरी (या'नी मुराद ह़ासिल करने) के लिये बुज़ुर्गों से दुआ़ कराना बेहतर है। दुआ़ के लिये अल्फ़ाज़ की तासीर के साथ ज़बान की भी तासीर चाहिये। कारतूस के असर के लिये राइफ़ल की ताक़त भी दरकार है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 153)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

अगले हफ़्ते का रिसाला

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025